DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal **(2013), 2, 67-74**

मानवतावादी जीवनदृष्टि : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में।

कृष्णा झरे

सारांश

मानवतावादी जीवनदृष्टि में व्यष्टिगत् और समष्टिगत जीवन विकास के आदर्श निहित हैं। यह मनुष्य जीवन को इस धरती पर अति विशिष्ट जीवन के रूप में स्वीकारती है एवं मानव, प्रकृति और परमात्मा के बीच सामञ्जस्य एवं पारस्परिक विकास के आदर्श प्रस्तुत करती है। सभी मानवतावादी विचारधाराओं एवं सिद्धान्तों में इसी जीवनदृष्टि की अभिव्यक्ति हुई है। इस धरा पर मनुष्य जीवन के साथ ही मनुष्यता रूपी आदर्श भी जन्मा है। मानवतावादी जीवनदृष्टि इसी आदर्श को जीवन में साकार बनाने में प्रयत्नशील रहती है। मनुष्य जीवन में अपने विकास के साथ–साथ जिस तरह विचारों और भावनाओं में एकरूपता, सामञ्जस्य का व्यापक स्वरूप प्रकट होता गया वही मानवतावादी जीवनदृष्टि के विकास का संवाहक रहा है। इस जीवनदृष्टि का सैद्धान्तिक व व्यावहारिक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक रहा है। मानवीय जीवन के कई ऐसे अनिवार्य पक्ष है जो मानवतावादी जीवनदृष्टि के स्वरूप का सृजन और विकास करते रहे हैं। नैतिकता, धार्मिकता, दार्शनिकता, सामाजिकता, आध्यात्मिकता आदि जीवन के ऐसे प्रमुख अंग हैं, जिनके अन्तर्गत मानवता के विकास एवं स्वरूप निर्धारण करने वाले सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता रहा है। अपनी भिन्न–भिन्न दृष्टि और आदर्शों के बावजूद भी पूर्वी और पाश्चात्त्य चिन्तन में प्रमुखतया नैतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टि पर आधारित ऐसे कई सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है, जिन्हें प्रकारान्तर से मानवतावादी सिद्धान्त के रूप में समझा गया है। इसके साथ ही ऐसे कई विचारक भी हुये हैं, जिन्होंने इस जीवनदृष्टि के आधार पर मानवता के मूल्य को केन्द्र में रखकर अपने मानवतावादी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। मनुष्य जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा का आधार मानवतावादी जीवनदृष्टि ही है। इसलिए इसका महत्त्व और प्रासंगिकता जीवन के समानान्तर सदैव मौजूद है। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में तो इसकी सर्वोपरि आवश्यकता है। क्योंकि इक्कीसवीं सदीं के मानव जीवन में हजारों तरह के विघटन और समस्याएँ हैं, परन्तु सबसे बड़ा संकट मानव जीवन के अस्तित्व का है और इसका एक मात्र समाधान मानवतावादी जीवनदृष्टि में है।

कूट शब्द : मानवतावाद, सार्वभौम, जीवनदृष्टि एवं मूल्य।

मानव जीवन को इस धरती पर विशिष्ट और सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। मानवतावादी जीवनदृष्टि मनुष्य की विशिष्टता और श्रेष्ठता को खोज कर उन्हें विकसित करने का मार्ग प्रस्तुत करती है। यह जीवनदृष्टि मनुष्य को ऊँचे आदर्शों और मूल्यों के प्रकाश में सतत श्रेष्ठ आचरण के लिए प्रेरित करती है तथा प्रेम, सेवा ,त्याग, बन्धुत्व, समानता, जैसे अनेक श्रेष्ठ मूल्यों को आधार बनाकर मानवता के सार्वभौम कल्याण का प्रसार करती है। मानवतावादी जीवनदृष्टि का विकास एवं विस्तार मानवतावादी विचारधाराओं के रूप में हुआ है। इस जीवनदृष्टि पर आधृत चिन्तन का उद्देश्य मनुष्य का विकास और कल्याण करना है। भारतीय एवं पाश्चात्त्य विचारधाराओं में इस जीवनदृष्टि पर आधृत चिन्तन अनेक सिद्धातों एवं जीवन पद्धतियों के रूप में प्रकट हुआ है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि शुभ, शिव और आनन्द की स्थापना के लिए सदैव प्रयत्नशील रही है। इस प्रयत्नशीलता को मानव अपनी भावना, प्रवृत्ति, संस्कार एवं विवेक के अनुसार निर्धारित करता है और अपने जीवन के आदर्श निश्चित करता है (शर्मा, 1978)। मानवता का आदर्श एक ऐसा आदर्श है जो आरम्भकाल से मानव चिन्तन के केन्द्र में रहा है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि ने आरम्भ काल में ही मानवता के अत्यन्त सूक्ष्म तत्त्वों को खोज लिया गया था। वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि में मानवतावाद की जिस व्यापक भावना की अभिव्यक्ति हुई है, उसकी प्रेरणा एवं प्रभाव भारतीय चिन्तन में निरन्तर मौजूद रहा है। पाश्चात्त्य सभ्यता की आद्यतन यात्रा में भी अनेक मानवतावादी जीवनमूल्यों की खोज एवं विकास हुआ है। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि मानवतावादी विचारधारा नयी है अथवा आधुनिक युग का नया चिन्तन है; क्योंकि पूर्ववर्ती चिन्तन मानव जीवन के नैतिक एवं आध्यात्मिक मापदण्डों के रूप में मानवतावाद का प्रतिपादन करता रहा है। जबकि आधुनिक चिन्तन ने मानवतावाद के रूप में इसके सैद्धान्तिक स्वरूप की मौलिक व्याख्यायें प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

आधुनिक काल में मानवतावादी जीवनदृष्टि पर आधृत चिन्तन को सबसे प्रभावशाली कहा जा सकता है। इस चिन्तन ने मानव समाज को पुनर्जागरण का नया जीवन दर्शन प्रदान किया है। मानव जीवन की सामाजिक एवं

राष्ट्रीय मूल्य चेतना को प्रदीप्त करने वाली आधुनिक समय की सभी क्रांतियों को मानवतावादी जीवनदृष्टि ने ही उत्पन्न किया है। भारतीय समाज के सुधारवादी आन्दोलन हो अथवा पाश्चात्त्य के नैतिक मूल्यवादी सिद्धान्त; ये सभी मानवतावादी जीवनदृष्टि से प्रेरित है। मनुष्य जीवन के समग्र विकास एवं सार्वभौम कल्याण की दृष्टि से मानवतावादी जीवनदृष्टि की वर्तमान समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। आज मनुष्य का जीवन एवं समाज जिस प्रकार के मूल्यवादी संकट से त्रस्त है। प्रेम, दया, सेवा, करूणा, विश्वास, मैत्री जैसे जीवन मूल्य आज अपवाद स्वरूप दिखते है। स्वार्थ, संकीर्णता और कई तरह की आत्मघाती प्रवृत्तियों ने सारे मानव समुदाय को जकड़ रखा है। ऐसे में इनसे उबरने एवं भावी विकास के कल्याणकारी मार्ग पर आगे बढ़ने में मानवतावादी जीवनदृष्टि ही आज के युग का सफल मार्गदर्शन कर सकती है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि का स्वरूप

मानवतावादी जीवनदृष्टि का आदर्श मनुष्य जीवन है एवं इसका स्रोत भी मनुष्य ही है, किन्तु इसके उद्देश्य में सृष्टि का सार्वभौम जीवन समाहित है। चूंकि मनुष्य जीवन सृष्टि के केन्द्र में है। जब से मनुष्य जीवन का प्रारम्भ हुआ है तभी से मानवतावादी जीवनदृष्टि का उद्भव और सतत विकास चलता रहा है। यह मनुष्य द्वारा मनुष्यता की अनवरत् खोज और उपलब्धि की प्राणप्रवाहक चेतना है। इसलिए यह जीवनदृष्टि सदैव सामयिक और प्रासंगिक रही है। यही सही अर्थों में हमें मनुष्य जीवन की विशिष्टताओं, उत्कृष्ट स्वरूप और सर्वोच्च विकास का परिचय कराती है। प्रत्येक युग में सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करने वाले प्रकाश स्रोत मानव जीवन की गहनता और ऊँचाई से प्रस्फूटित हुए हैं। मानवतावादी जीवनदृष्टि ही वैदिक ऋषियों की मंत्रवाणी में, उपनिषदों के विचार मन्थन में, पुराण, स्मृति, महाकाव्य, गीता, रामायण जैसे नैतिक और आध्यात्मिक सूत्रों के चिन्तन में समाहित होकर सार्वभौम कल्याण का प्रसार करती रही है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि मनुष्य जीवन के स्वरूप का बड़े व्यापक अर्थ में परिचय कराती है। भारतीय ग्रन्थों और विचारकों ने मनुष्य जीवन की महिमा का उत्कृष्टतम गान किया है। पाश्चात्त्य चिन्तन के भी मौलिक स्रोत एवं परवर्ती परम्पराओं में निर्विवाद रूप से मनुष्य जीवन को समस्त क्रियाओं का मूल माना है। मानवतावादी जीवनदृष्टि मनुष्य जीवन को समग्रता में देखती है तथा श्रेष्ठतम विकास के लिये नैतिक आचरण एवं आन्तरिक विकास पर अत्यधिक बल देती है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि का नैतिकता तथा आध्यात्मिकता से घनिष्ठ सम्बन्ध है। कोई व्यक्ति यदि सदाचारी नहीं है, नैतिक आदर्शों में उसकी आस्था नहीं है, परमात्मा की सत्ता में विश्वास नहीं है तथा यदि उसमें सहृदयता व सात्त्विकता नहीं है, तो मानवता की भावना उसमें स्फुरित नहीं हो सकती। इस जीवनदृष्टि में त्याग और परमार्थ की भावना को मानवता के बीज रूप में स्वीकार किया गया है। सन्त विनोबा के अनुसार ''स्वार्थ–संकीर्णता को तोड़े बिना कोई व्यक्ति मानवतावादी नहीं बन सकता। इसके लिए हृदय को विशाल और उदार बनाने की आवश्यकता होती है'' (भावे ,2001)।

समस्त धर्मों और आध्यात्मिक विचारधाराओं का उद्देश्य मानवीय अन्तस् को विराट् और व्यापक बनाना रहा है जिससे मानवता की सिद्धि हो सके। इसी के निमित्त आरम्भकाल से ही मनुष्य के समक्ष जीवन के उच्चतम् कर्त्तव्य एवं लक्ष्य का आदर्श प्रस्तुत किया जाता रहा है। ऐसे अनेक सन्त, मनीषी हैं जिन्होंने मनुष्य की समानता और आपसी प्रेम की शाश्वत भावना को स्वीकार करते हुए भगवद्दृष्टि में सभी मनुष्य को समान बताया है–'मानव–मात्र एक समान, एक पिता की सब सन्तान।' इस तरह सार्वभौम समानता, एकता और कल्याण से युक्त मानवतावादी जीवनदृष्टि विश्व जीवनदृष्टि भी है।

भारतीय विचारधारा

मानवतावादी जीवनदृष्टि के प्रथम स्वर वेद में मुखरित हुये हैं। वैदिक साहित्य में मानवतावादी जीवनदृष्टि की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति हुई है। वैदिक विचारधारा में यद्यपि देववाद तथा यज्ञ आदि कर्मकाण्ड का विस्तृत विवेचन है तथापि मानवीय व्यवहार की दृष्टि से वैदिक विचारों का नैतिक महत्त्व भी है। वैदिक जीवनदृष्टि में मानवता को एक व्यापक कल्याणकारी भावना के रूप में प्रतिपादित किया है; उसे जीवन दर्शन का रूप दिया है,– ''तुम्हारी मन्त्रणा में, समितियों में, विचारों में और चिन्तन में समानता हो, सद्भावना हो, वैषम्य और दुर्भावना न हो। तुम्हारे अभिप्रायों में, तुम्हारे हृदयों में और तुम्हारे मनों में एकता की भावना रहनी चाहिए, जिससे तुम्हारी संगठित और सामुदायिक शक्ति का विकास हो सके'' (ऋग्वेद– 10/191/3–4)। वेदों में मनुष्य को 'अमृतस्य पुत्राः' (ऋग्वेद–5/59/6) कहकर सबमें समानता का भाव प्रकट किया है। इस प्रकार वैदिक मानवतावादी जीवन दृष्टि भ्रातृभाव एवं विश्व बन्धुत्व को सबल आधार प्रदान करती है और प्राणिमात्र के कल्याण की भावना का प्रसार करती है।

वैदिक विचारों का गहन और सूक्ष्म विवेचन उपनिषदों में हुआ हैं। ''मानवता की खोज एवं विकास में उपनिषदों का स्थान विश्व में सर्वोच्च एवं अद्वितीय है'' (झरे, 2009)। उपनिषदों की मानवतावादी जीवनदृष्टि ने ही

सर्वप्रथम आध्यात्मिक मानवतावाद का प्रतिपादन किया है। एक आत्मा का दूसरी आत्मा के साथ और प्रत्येक आत्मा का परमात्मा के साथ नैतिक तथा आध्यात्मिक सम्बन्ध बताया है। मानवता के विकास की दृष्टि से उपनिषदों का चिन्तन तर्कसंगत और विचारशील है। कठोपनिषद् में कहा गया है कि–''मनुष्य को अपने भीतर गुह्य रूप से स्थित स्वयं के आत्मस्वरूप को जानना चाहिये'' (कठोपनिषद्– 1/5/20)। मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतन्त्र है। उसे श्रेय मार्ग अथवा प्रेय मार्ग अपनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। ''वह विद्या एवं अविद्या, सम्भूति और असंभूति में से किसी भी विकल्प का चयन कर सकता है'' (ईशावास्योपनिषद्–11)। परन्तु मनुष्य को कर्म स्वतन्त्रता के साथ में उपनिषदों ने यह भी उपदेश दिया है कि 'मनुष्य को शुभ कर्म ही करने चाहिए और अशुभ कर्मों का त्याग करना चाहिए।' इस तरह उपनिषदों की जीवनदृष्टि ने ज्ञान और कर्म के समन्वय में मानवता को विकसित करने का आदर्श प्रस्तुत किया है। उपनिषदों की भाँति ही गीता में भी मनुष्य को सम्पूर्ण मानवता का उच्चस्तरीय जीवन दर्शन प्रदान किया है। गीता में वर्णित 'निष्काम कर्मयोग' और 'लोकसंग्रह' की अवधारणा मानवता की पोषक है। यहाँ मनुष्य के आचरण एवं व्यवहार को संयमित करने वाले उपदेश एवं 'विश्वधर्म' के रूप में सच्ची मानवता का मार्ग प्रशस्त करने वाली जीवनदृष्टि मौजूद है (श्रीमद्भगवद्गीता– 12/13,14,16,18)। भारतीय षड्दर्शनों की मानवतावादी जीवनदृष्टि भी वैदिक विचारधारा की पोषक है। न्याय–वैशेषिक दर्शन की मानवतावादी दृष्टि मनुष्य का कल्याण ईश्वरोन्मुख जीवन में स्वीकार करती है। सांख्य–योग दर्शन में विवेकपूर्ण जीवन की उपलब्धि को मानवता का आदर्श कहा गया है। मीमांसा दर्शन में वेद प्रतिपादित कर्म–आचरण के नियमों का पालन करना ही मानवता की उपलब्धि है। वेदान्त दर्शन की जीवनदृष्टि उपनिषदों पर ही आधारित है। वस्तुतः षड्दर्शनों में मानवतावादी जीवनदृष्टि मोक्ष अथवा मुक्ति के रूप में मानवता के सर्वोच्च मूल्य का प्रतिपादन करती हैं।

भारतीय चिन्तन की नास्तिक कही जाने वाली जैन एवं बौद्ध विचारधाराओं में भी मानवतावादी जीवनदृष्टि का उदात्त स्वरूप प्रकट हुआ है। दोनों ने मनुष्य के कर्म, आचरण एवं व्यवहार की पवित्रता पर अत्यधिक बल देते हुये नैतिकता के उच्चतम मूल्यों का प्रतिपादन किया है। ये प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा एवं करुणा की महान भावना की प्रबल समर्थक एवं प्रसारक चिंतनधारा रही है। नास्तिक विचारधारा में एक नाम चार्वाक दर्शन का भी आता है। चार्वाकवादी चिन्तन मनुष्य के भोग प्रधान लौकिक जीवन को ही मानवता का लक्ष्य मानता है। यह विचारधारा भारतीय चिन्तन की अध्यात्मवादी धारा के विपरीत भौतिकवादी सुखवाद का समर्थन करती है।

समकालीन भारतीय विचारधाराओं का लक्ष्य मूलतः यथार्थ मानवतावादी चिन्तन रहा है। इस समय के विचारकों की मानवतावादी जीवनदृष्टि ने प्राचीन भारतीय आदर्शों का पुनर्मूल्यांकन किया एवं अनेक रचनात्मक तथा सुधारवादी आन्दोलन को जन्म देकर समाज को मानवता के यथार्थवादी आदर्शों पर चलने का मार्ग प्रशस्त किया। ऐसे विचारकों में प्रमुख हैं– राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, विनोबा, श्री अरविन्द, एम एन राय, डॉ0 राधाकृष्णन, पं. जवाहरलाल नेहरू एवं पं. श्रीराम शर्मा आचार्य।

भारतीय नवजागरण की आधारशिला रखने वाले राजा राममोहनराय ने मानव समाज के समक्ष मानवता का सार्वभौम आदर्श प्रस्तुत किया। उन्होंने एक ऐसे धर्म को स्थापित करने पर बल दिया जो विश्व के सभी मनुष्यों का बिना किसी भेदभाव के कल्याण कर सके। उन्होंने विभिन्न धर्मों के मध्य समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाकर मानवतावादी धर्म को स्थापित करने का प्रयास किया। वे मानव जाति को एक परिवार और विभिन्न जातियों को उसकी शाखायें मानते थे। अपने मानवतावादी उद्देश्य के लिए उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना कर भारत की सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना में नयी क्रांति का सूत्रपात किया। महर्षि दयानन्द राजा राममोहनराय के समकालीन थे किन्तु इन दोनों के विचारों में पर्याप्त भिन्नता है। महर्षि दयानन्द का मानवतावादी दृष्टिकोण मूल रूप से वैदिक सिद्धान्तों पर आधृत है। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर भारतीय समाज को वैदिक धर्म सम्मत मूल्यों का शिक्षण दिया। महर्षि दयानन्द ने आधुनिक समाज के लिए मानवतावादी और सांस्कृतिक मूल्यदृष्टि की प्रामाणिकता की खोज की (सहाय, 1971)।

आधुनिक भारतीय चिन्तन की मानवतावादी दृष्टि के विकास में रामकृष्ण परमहंस के विचारों की भी अग्रणी भूमिका रही है। परमहंस जी की जीवनदृष्टि अनुभूतिजन्य ज्ञान से प्रदीप्त थी। उनका मानवतावादी चिन्तन भारतीय संस्कृति एवं धर्म की अखण्ड एकता एवं सर्वग्रहणशीलता के सत्य को प्रमाणित करने वाले आध्यात्मिक अनुभवों का समुच्चय है। मनुष्य का आत्मिक एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष उनका मूल ध्येय है। सभी धर्मों एवं मत–मतान्तरों में समन्वय स्थापित करते हुए उन्होंने मानवता की डोर को एकता के सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया। स्वामी विवेकानन्द के विचारों को रामकृष्ण परमहंस की अनुभूति की ही व्याख्या कह सकते है। स्वामी जी की मानवतावादी जीवनदृष्टि के दो पहलु हैं, प्रथम– उनके गुरु रामकृष्ण के अनुभूति सम्पन्न

विचारों की व्याख्या एवं दूसरा– वेद, उपनिषद्, गीता, वेदान्त आदि के गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धान्तों का विश्व समाज में व्यावहारिक शिक्षण–प्रशिक्षण। उपनिषदों की भाँति स्वामी विवेकानन्द का मानवतावादी चिन्तन भी आध्यात्मिकता के केन्द्र में स्थित है। वे आधुनिक विश्व के समक्ष ''मानवात्मा की दिव्यता'' (रंगनाथानन्द, 1993) का उद्घोष करते हैं। आधुनिक जगत के वह ऐसे पहले विचारक थे जिन्होंने मनुष्यता को ईश्वरत्व की संज्ञा प्रदान की। उनकी प्रसिद्ध उक्ति है– ''केवल उसी ईश्वर की पूजा करनी चाहिए जो मनुष्य की आत्मा है और मनुष्य के शरीर में विराजमान है। यह ठीक है कि प्रत्येक प्राणी एक मन्दिर है लेकिन मनुष्य सबसे ऊँचा मन्दिर है। अगर आप प्रत्यक्ष मनुष्य की, जो ईश्वर रूप है, पूजा नहीं करते तो आप उस ईश्वर की पूजा कैसे कर सकते हैं जो अदृश्य है'' (विवेकानन्द, 2006)। स्वामी विवेकानन्द का मानवतावादी चिन्तन भारतीय जीवन की सनातन दृष्टि का साकार रूप कहा जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द के बाद रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गाँधी की मानवतावादी जीवनदृष्टि ने भारतीय चिन्तन चेतना को गहराई में स्पर्श किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर अपने विचारों को मानव धर्म का प्रतिनिधि एवं मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेठ प्राणी कहते हैं। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं– ''मेरा धर्म मानव है, जिसमें वह अनन्त मानवता से परिभाषित होता है'' (Tagore, 1988)। टैगोर का मानवतावादी चिन्तन दार्शनिक दृष्टि पर नहीं अपितु रहस्यात्मक और सौन्दर्यपरक अनुभूतियों पर आधारित है। टैगोर के चिन्तन से अलग महात्मा गाँधी का चिंतन यथार्थवादी रहा है। गाँधी ने उच्चतम नैतिक मूल्यों का सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन के क्षेत्र में सफलतापूर्वक प्रयोग किया। विवेकानन्द की भाँति गांधी जी ने भी मानव सेवा को ईश्वर तुल्य माना है। ''उन्होंने अपने मानवतावदी चिंतन से भारत की राष्ट्रीय चेतना को ही नहीं जगाया अपितु सत्य, न्याय और प्रेम जैसे आदर्श मूल्यों के आधार पर आधुनिक मानवता को नयी दिशा प्रदान की'' (देवराज, 1976)।

भारत की आधुनिक विचारधारा में डॉ. राधाकृष्णन, पं. जवाहरलाल नेहरू और एम एन राय जैसे विचारकों का मानवतावादी चिन्तन भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी मानवतावादी जीवनदृष्टि में 'धर्मशास्त्रीय मानवतावाद' का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किया है; जो सभी धर्म सम्प्रदायों में समन्वयात्मक एकता का समर्थक और मानव एकता का पोषक है (राधाकृष्णन, 1995)। जवाहरलाल नेहरू ने मानवता एवं वैज्ञानिकता– दोनों के मूल्यों का समर्थन करते हुये 'वैज्ञानिक मानवतावाद' का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। इसी तरह एम एन राय ने मार्क्स के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावित होकर 'नव्य मानवतावाद (Roy, 1961) को प्रतिपादित किया है। बीसवीं सदी के सभी भारतीय विचारकों में जिनका अद्वितीय स्थान कहा जा सकता है, वह हैं– महायोगी श्रीअरविन्द। श्रीअरविन्द की मानवतावादी जीवनदृष्टि सर्वथा नवीन विचाराधारा को जन्म देती है एवं नयी भाषा में मानवता के नये दर्शन का प्रतिपादन करती है। वे अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों के आधार पर दिव्य मानवता से युक्त भावी संस्कृति की स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करते है। श्रीअरविन्द मानव के इसी जीवन में मानवता को अतिमानवता में प्रतिष्ठित करने का आहवान् करते हैं, साथ ही ''दिव्य मानवता को मानव जीवन की अनिवार्य संभावना कहते हैं'' (श्रीअरविन्द, 2011)। बीसवीं सदी के ही उत्तरार्ध में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपनी मानवतावादी जीवनदृष्टि में 'विचार क्रान्ति' (आचार्य, 1998) के रूप में आधुनिक विश्व को नया जीवन दर्शन प्रदान किया है। आचार्य जी ने सनातन संस्कृति के जीवन मूल्यों के आधार पर जीवन की सामयिक विवेचना कर अध्यात्मवादी मानवतावाद की नयी विचारधारा को जन्म दिया है। साथ ही आध्यात्मिक जीवनदृष्टि और मूल्यनिष्ठ जीवन पद्धति का समन्वय कर नये युग के समक्ष सच्ची मानवता का आदर्श प्रस्तुत किया है।

पाश्चात्त्य विचारधारा

पाश्चात्त्य विचारधारा का मूल उद्गम ग्रीक (यूनान) को कहा जाता है।'' पाश्चात्त्य जगत के सभी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का सूत्रपात यूनानी चिन्तन में हुआ है'' (शर्मा, 1998)। वैसे तो मानवतावादी जीवनदृष्टि की झलक यूनान के महाकवि होमर के काव्यों में देखी जा सकती है, जिनमें त्याग, बलिदान, शौर्य और आत्मसम्मान जैसे मूल्यों को उभारा है। किन्तु स्पष्ट रूप से मानव केन्द्रित चिन्तन सोफिस्टों से प्रारम्भ होता है। सोफिस्टों में प्रोटागोरस की यह प्रसिद्ध उक्ति– 'मानव सभी बातों का मापदण्ड है'– को पाश्चात्त्य मानवतावाद का प्रथम स्वर कहा जा सकता है। सुकरात, प्लेटो और अरस्तु जैसे महान ग्रीक विचारकों ने सही अर्थों में पाश्चात्त्य मानवतावादी विचारधारा को ठोस आधार प्रदान किया। मानवतावादी चिन्तन की दृष्टि से सुकरात ने उच्चकोटि के विचार प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने 'ज्ञान को ही धर्म या सद्गुण' कहा और मनुष्य के लिए शिवतत्त्व का ज्ञान सर्वोत्तम धर्म बताया। सुकरात का उद्देश्य था मानव को सदाचारी जीव बनाना। प्लेटो ने भी मनुष्य को सद्गुणों और उदार चरित्र की शिक्षा प्रदान की एवं इच्छा, भावना और ज्ञान को मानवीय आचरण के तीन प्रमुख स्रोत कहा। अरस्तु की मानवतावादी दृष्टि ने मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा एवं विवेक और ज्ञान से परिपूर्ण जीवन जीने का मार्ग बताया।

ग्रीक युग के पश्चात् मध्ययुग का मानवतावादी चिन्तन धार्मिक और साम्प्रदायिक मापदण्डों में सीमित रहा। इस काल की जीवनदृष्टि ईश्वर और ईसाई धर्म के सिद्धांतों की ओर केन्द्रित रही। यहा स्वतन्त्र रूप में मानवतावादी चिन्तन को स्थान नहीं मिला। आगस्टाइन, एक्विनस जैसे कुछ विचारकों ने मानव जीवन के व्यावहारिक मूल्यों का समर्थन अवश्य किया है किन्तु उनका चिन्तन भी ईसाई धर्म से प्रेरित ही रहा।

पाश्चात्त्य विचाराधारा का पुनर्जागरण काल आधुनिक चिन्तन से प्रारम्भ होता है। इस काल में सभी मानवतावादी विचारों को तर्कसंगत एवं व्यवस्थित रूप देने का प्रयास किया गया। मेकियावेली, दांते, पेटार्क आदि विचारकों की मानवतावादी जीवनदृष्टि ने मनुष्य जीवन को पुनः चिन्तन के केन्द्र में लाकर खड़ा कर दिया। इसी के साथ पाश्चात्त्य चिन्तन बुद्धिवादी और अनुभववादी विचारधाराओं के माध्यम से वस्तुगत ज्ञान लिए भी आग्रहशील हुआ। बुद्धिवादी विचारकों में देकार्त, स्पिनोजा, लाइब्नित्ज एवं अनुभववादी में लॉक, बर्कले और ह्यूम के विश्लेषणात्मक निष्कर्षों ने पाश्चात्त्य सभ्यता को नयी जीवनदृष्टि प्रदान की। इन दोनों विचारधाराओं का परिष्कृत रूप कांट और हेगेल के विचारों में प्रकट हुआ है। कांट ने मानवता के विकास के लिए उच्चस्तरीय नैतिक विचारों का प्रतिपादन किया एवं मनुष्य को कर्त्तव्य के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी।

वस्तुतः आधुनिक पाश्चात्त्य विचारधारा की मानवतावादी जीवनदृष्टि नैतिकता प्रधान रही। वाल्टेयर, रूसो, मार्क्स जैसे विचारकों की सुधारवादी प्रवृत्तियों ने पश्चिम में मानवता के विकास हेतु सशक्त आधार तैयार किया। सोलहवीं–सत्रहवीं शताब्दी की यूरोपीय हिंसा और संघर्ष के बाद पश्चिमी विचारधारा अत्यन्त व्यावहारिक, यथार्थवादी और विज्ञानोन्मुख चिन्तन में संलग्न हुयी। मानवतावादी चिन्तन का प्रतिनिधित्व करने वाली अनेक चिन्तन पद्धतियाँ और सिद्धांत प्रकाश में आये। इनमें से प्रमुख हैं– बुद्धिवाद, आत्मपूर्णतावाद, सुखवाद, अन्तःप्रज्ञावाद, उपयोगितावाद, अर्थक्रियावाद, प्रत्यक्षवाद, भौतिकवाद, व्यक्तिनिष्ठवाद और अस्तित्ववाद आदि। ये सभी विचार पद्धति किसी न किसी रूप में मानवतावादी जीवनदृष्टि पर आधारित हैं। विलियम जेम्स, शिलर, प्रो. राल्फ, ड़ॉ. अलबर्ट श्वित्जर जैसे आधुनिक विचारकों ने अपने मानवतावादी चिन्तन को भारतीय मूल्यवाद के समक्ष तर्कसंगत रूप में प्रस्तुत किया। इन्होंने मनुष्य की सृजनात्मकता, नैतिकता और आत्मिक एकता को विश्व कल्याण का समन्वित रूप कहा (Seaver, 1955)। उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी में पाश्चात्त्य विचारधारा के मानवतावादी चिन्तन ने 'मानववाद' के रूप में नया जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। फ्रांसीसी विचारक जॉक मारितां और ज्यां पाल सार्त्र ने मानववाद एवं अस्तित्ववाद (Sartre, 1955) के रूप में इस जीवन दर्शन को आधुनिक युग में नयी क्रान्ति बनाकर प्रस्तुत किया।

वस्तुतः पाश्चात्त्य की आधुनिक मानवतावादी जीवनदृष्टि ने मानववाद के रूप में जिस नये जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया; वह मूलतः प्रकृतिवादी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधृत है। इस विचारधारा में अलौकिक शक्तियों, जैसे– ईश्वर आदि को नकार दिया गया है। जूलियन हक्सले, कारलिस लेमान्ट जैसे विचारकों ने मानववाद का मुख्य उद्देश्य मानवकल्याण माना और कहा कि मनुष्य को किसी अन्य अलौकिक सत्ता की आवश्यकता नहीं है, वह स्वयं अपना कल्याण करने में समर्थ है। लेमान्ट के शब्दों में– ''मानववाद के लिए प्रकृति ही सम्पूर्ण अस्तित्व है और उसमें पुद्गल तथा ऊर्जा का सतत प्रत्यावर्तन हुआ करता है। वह किसी मन या चेतना में आश्रित नहीं है'' (Lamont, 1958)। इस मानववादी जीवनदृष्टि ने आधुनिक पाश्चात्त्य समाज, संस्कृति और सभ्यता पर गहरा प्रभाव डाला है। नयी सभ्यता में विज्ञान और तकनीकि विकास के समानान्तर यह नया जीवन दर्शन भी पाश्चात्त्य की वर्तमान जीवन पद्धति में समन्वित हो गया है।

तुलनात्मक अध्ययन

साम्य

भारतीय विचारधारा में सर्वप्रथम वेदों की मानवतावादी जीवनदृष्टि ने जिस तरह उच्चस्तरीय मूल्यों और आदर्शों को सामने रखकर मनुष्य जीवन के समग्र कल्याण की आधारशिला रखी, उसी तरह पाश्चात्त्य विचारधारा में भी ग्रीक मानववतादी जीवनदृष्टि ने ऊँचे मूल्यों को श्रेष्ठतम जीवन विकास का माध्यम बनाया है। वैदिक ऋषियों ने मनुष्यता के मापदण्ड में जिस प्रकार आचरण सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों और नियमों का उल्लेख किया है, उसी प्रकार ग्रीक विचारक सुकरात, प्लेटो, आदि ने भी श्रेष्ठ और शुभ आचरण को मानवता का आदर्श माना है। दोनों ही विचारधाराओं में मानवतावाद के मौलिक सूत्र प्रारम्भ में ही स्थापित हो चुके थे। मानवतावादी चिन्तन की दृष्टि से दोनों ही विचारधाराओं के प्रारम्भिक काल को स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। दोनों की जीवनदृष्टि का मूल भाव मनुष्य जीवन को ऊँचा उठाकर श्रेष्ठतम मूल्यों की प्राप्ति कराना रहा है।

भारतीय और पाश्चात्त्य– दोनों विचारधारा मनुष्य के विकास और कल्याण का भाव लेकर अग्रसर होती है और

मनुष्य जीवन में मनुष्यता को अति विशिष्ट मानती है। दोनों ही मानवता के मूल्यों की प्रबल समर्थक रही है और मानवीय जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के एकीकरण का समाधान खोजने में तत्पर हुयी है। दोनों ही विचारधाराओं ने अपनी यात्रा के मध्यकाल में अन्धकार युग का सामना किया है एवं मानवता को इससे बाहर लाने का लम्बा संघर्ष किया है। साहित्यिक दृष्टिकोण से भी भारतीय और पाश्चात्त्य चिन्तन में मानव मूल्य जैसे– प्रेम, त्याग, सेवा, बन्धुत्व आदि का अग्रणी स्थान रहा है। जिस प्रकार भारत का वैदिक साहित्य मानव जीवन व समाज के नीति–नियमों का विवेचन करने वाली अनुपम कृतियाँ हैं। मनु, कौटिल्य, याज्ञवल्क्य, भृगु, बोधायन जैसे ऋषियों द्वारा आदर्श जीवन पद्धति की विवेचना प्रस्तुत हुयी है। उसी प्रकार पाश्चात्त्य जगत में भी महात्मा सुकरात, प्लेटो और अरस्तु के विचार एवं उनकी कृतियों का स्थान है। वेदों की भाँति ही प्लेटो की "द रिपब्लिक" को पाश्चात्त्य साहित्य में अमर कृति माना गया है।

मानवतावाद की दृष्टि से जिस प्रकार भारतीय पुनर्जागरण काल सुधारवादी आन्दोलनों और क्रान्तियों के स्वर में प्रारम्भ हुआ है, उसी प्रकार पाश्चात्त्य चिंतन भी धार्मिक कट्टरता और हिंसात्मक संघर्षों से ग्रस्त मानवता को बचाने और नये मूल्यों को स्थापित करने के लिए मुखर हुआ है। दोनों की ही आधुनिक मानवतावादी जीवनदृष्टि पहले की तुलना में अधिक यथार्थवादी और व्यावहारिक रूप में प्रकट हुयी है।

इस तरह हम देखते हैं कि भारतीय विचारधारा एवं पाश्चात्त्य विचाराधारा की मानवतावादी जीवनदृष्टि में जीवन मूल्यों, आदर्शों और कल्याणकारी प्रवृत्तियों को लेकर अनेक तरह की समानता दिखायी देती है। परन्तु इन समानताओं के बावजूद भी दोनों विचारधाराओं की जीवनदृष्टि में पर्याप्त अन्तर मौजूद है।

वैषम्य

भारतीय विचारधारा एवं पाश्चात्त्य विचारधारा की मानवतावादी जीवनदृष्टि का सबसे मौलिक वैषम्य यह है कि– 'भारतीय जीवनदृष्टि आध्यात्मिक अनुभूतियों और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधृत है, जबकि पाश्चात्त्य जीवनदृष्टि का आधार बुद्धिवाद है।' वस्तुतः पाश्चात्त्य चिन्तन में सुकरात, प्लेटो आदि की जीवनदृष्टि में भारतीय चिन्तन की भाँति व्यापकता अवश्य दिखायी देती है, किन्तु उनके सिद्धांतों की मौलिक संरचना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही सन्निहित रहा जो अरस्तु के चिन्तन में स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है। इसी तरह आधुनिक विचारकों में कांट, हेगेल, ब्रैडले आदि ने भी मानवता के उच्चस्तरीय मूल्यों का प्रतिपादन किया है, परन्तु इनके विचार भी मूलतः बुद्धिवाद पर ही आधृत है। जबकि भारतीय मूल्यवाद सदैव अध्यात्म केन्द्रित रहा है। वेदों, षड्दर्शनों से लेकर आधुनिक चिन्तन तक सभी विचारधाराओं में अध्यात्म के उच्चस्तरीय जीवन मूल्यों को मानव जीवन के केन्द्र में रखकर चिन्तन हुआ है।

भारतीय मानवतावादी जीवनदृष्टि की दिशा सदैव चेतन आत्मतत्व की ओर ही रही है। यह जीवनदृष्टि मनुष्य जीवन में परम चैतन्य 'अद्वैत' तत्त्व की खोज में सदैव संलग्न रही है और इसी आधार पर विश्व एकता के सूत्रों को तलाशने का प्रयास करती रही है। इसकी मूल मान्यता रही है कि– "मनुष्य की एकता और मनुष्य की आत्मोपरिता केवल आत्मा में जीने के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है" (शर्मा, 2004)। यही कारण है कि भारतीय जीवनदृष्टि में नैतिकता मनुष्य का लक्ष्य नहीं अपितु परम आत्मिक लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है। सत्य, शील, अहिंसा जैसे सद्गुणों और नैतिक जीवन के प्रवाह में ही मानव परम मूल्य को प्राप्त करता है। पाश्चात्त्य जीवनदृष्टि का आधार अध्यात्मवादी न होकर नैतिकतावादी रहा है। पश्चिम के जिन विचारकों ने ईश्वर, आत्मा आदि संप्रत्ययों के द्वारा अध्यात्म तत्त्व का निरूपण किया है, उनमें भी भारतीय चिन्तन जैसी व्यापकता नहीं है। पाश्चात्त्य मानवतावादी जीवनदृष्टि ने मानव के अधिकतम विकास को किसी अलौकिक अथवा आध्यात्मिक संसार में न खोजकर नैतिक और व्यावहारिक जीवन मूल्यों के रूप में इसी संसार में खोजने का प्रयास किया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

मानवतावादी जीवनदृष्टि को लेकर भारतीय एवं पाश्चात्त्य विचारधारा में मतान्तर अवश्य दिखायी पड़ता है, परन्तु वर्तमान के सन्दर्भ में दोनों का महत्त्व है। भारतीय जीवनदृष्टि में मानवता के श्रेष्ठतम मूल्य और आदर्श मौजूद है, जो मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं और पाश्चात्त्य जीवनदृष्टि हमें सार्थक मानव मूल्यों का व्यावहारिक स्तर पर मूल्यांकन एवं उपयोगिता की कसौटी प्रदान करती है। एक ओर पश्चिमी दृष्टि का व्यावहारिक मूल्यवाद हमें आधुनिक भौतिकवादी जीवन में समायोजन एवं विकास का मार्ग दिखाता है, तो दूसरी ओर भारतीय जीवनदृष्टि व्यवहार के यथार्थ धरातल से ऊँचा उठाकर अनन्त संभावनाओं के आत्मिक संसार में ले जाती है। मनुष्य जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दोनों ही जीवनदृष्टि मानव कल्याण में सहायक कही जा सकती हैं।

वर्तमान समय की यह सबसे बड़ी विडम्बना है कि मानव की आधुनिक सभ्यता आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों से दूर भौतिकतावादी जीवनदृष्टि और भोगवादी जीवन पद्धति में आबद्ध होती जा रही है। विश्व में सर्वत्र भोगवादी मूल्यों का विस्तार और समर्थन बढ़ता जा रहा है। ऐसे युग में मानवता की, मूल्यात्मक जीवन की बात करना कठिन जान पड़ता है। पहलु का दूसरा सच यह भी है कि आधुनिक मानव ऐसे मूल्य संकट से घिर चुका है कि समय रहते समाधान न खोजा जाये तो सम्भवतः उसका जीवन अस्तित्व ही इस धरती से विलुप्त हो जाये। वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने जीवन के बाह्य स्वरूप में भले ही चमक पैदा की हो, किन्तु मनुष्य के आन्तरिक जीवन को खालीपन और संकीर्णता से भर दिया है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में जो समस्यायें आज दिखायी दे रही हैं, वे सभी का सम्बन्ध मानवतावादी दृष्टि की उपेक्षा से जुड़ा है।

मानवतावादी जीवनदृष्टि ही मनुष्य के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक जीवन स्तर पर मूल्यों की खोज करती है और सभी स्तर के मूल्यों को मानवता रूपी सूत्र में बाँधती है। यह दृष्टि को खो देने से ही आज जीवन के सभी स्तर मूल्यहीनता से ग्रस्त दिखायी पड़ते हैं। आज व्यक्तिगत जीवन मूल्यों में ऊँचे विचारों, आदर्शों के स्थान पर स्वार्थ, संकीर्णता और मानसिक विक्षुब्धता अधिक दिखायी देती है। पारिवारिक जीवन के मूल्य आपसी कलह और विघटन से बुरी तरह टूट–बिखर गये हैं। राष्ट्रीय मूल्यों में त्याग, सेवा, समर्पण और राष्ट्रप्रेम की भावना के स्थान पर जातिवाद, धर्म–सम्प्रदायवाद और भ्रष्टाचार जैसी घातक दुष्प्रवृत्तियां फैल चुकी हैं। वैश्विक जीवन मूल्य आपसी एकता, सहयोग और बन्धुत्व जैसे कल्याणकारी भावों के स्थान पर पारस्परिक पुंजीवादी प्रतिस्पर्धा, वर्चस्व और आतंकवादी जैसे वृत्तियों में उलझ गये हैं।

आज मानव जीवन में मानवता को पोषण देने वाले मूल्यों को खोज निकालना कठिन है। लेकिन एक सच यह भी है कि आज मानव समुदाय का बहुत बड़ा भाग इस ओर सचेत और चिन्तनशील है। मूल्यवादी विचारों, अवधारणाओं और मूल्य प्रसारक संस्था–संस्थानों की भीड़ सी एकत्रित होती जा रही है। किन्तु व्यावहारिक धरातल पर इन्हें मूल्य संकट को दूर करने एवं मानवता के पतन को रोकने में किसी तरह सफल नहीं कहा जा सकता; क्योंकि समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। वर्तमान में मानव सभ्यता की स्थिति को देखकर यह कहना कठिन है कि वह विकास के भावी क्रम में स्वर्णिम इतिहास रचने जा रही है अथवा आत्मघाती विनाश की लीला। आज हमें पुनः मानवतावादी जीवनदृष्टि के प्रकाश में नये जीवन मूल्यों और आदर्शों को खोजने की आवश्यकता है। मानवता के श्रेष्ठतम मूल्यों के सामने वर्तमान जीवन दर्शन एवं जीवन पद्धति का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है तभी हम इस धरती पर मानवता को बचाने और विकसित करने में सफल हो सकते हैं।

मानवतावादी जीवनदृष्टि इस युग की सबसे बड़ी मांग और आवश्यकता है। मानव के जीवन में मानवता का पतन सबसे बड़ा संकट माना जाना चाहिए। इस संकट का एकमात्र समाधान मानवतावादी जीवनदृष्टि अपनाकर मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में है। इस दिशा में भारतीय और पाश्चात्त्य मानवतावादी विचारधाराओं में मार्गदर्शन के पर्याप्त तत्त्व मौजूद हैं, लेकिन इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस युग का मानव मानवतावादी जीवनदृष्टि अपनाकर स्व–मूल्यांकन करे।

निष्कर्ष

मानवतावादी जीवनदृष्टि का उद्देश्य एवं निष्कर्ष दोनों ही इस विश्व में मानवता का उत्थान और सार्वभौम कल्याण है। यह जीवनदृष्टि व्यष्टि और समष्टि जीवन में एकत्व और समन्वय की भावना की विस्तारक है। मनुष्य जीवन को निम्नवृत्तियों से उठाकर मानवता में प्रतिष्ठित करना इसका परम आदर्श है, एवं श्रेष्ठतम मूल्यों की खोज में ईश्वरत्व जैसे सर्वश्रेष्ठ मूल्य तक की यात्रा इसका ध्येय है। यह अपने जीवन के लिए उपयोगी व्यवहार और सिद्धान्त दोनों का समर्थन करते हुए जीवन जीने के लिए विश्व मानवता के समक्ष श्रेष्ठतम मार्ग प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। मानवता के आदर्शों के बिना इस संसार में मानव जीवन का मूल्य नहीं रह जाता। मानवतावादी जीवनदृष्टि विभिन्न कालों में मानवता के इन्हीं आदर्शों का पोषण करती रही है। आज मानवीय समाज में मानवता के आदर्श कमजोर पड़ने के कारण ही व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में अनेक तरह की विसंगतियाँ पैदा हो चुकी है जिनका समाधान मानवतावादी जीवनदृष्टि ही कर सकती है। यह जीवनदृष्टि और विचारधारा आज की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक जीवन पद्धति की प्रेरक है। सारे विश्व मानव समाज में आज इसकी मांग और आवश्यकता है।

कृष्णा झरे, पी–एच.डी., असिसटेंट प्रोफेसर, जीवन प्रबंधन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत।

संदर्भ सूची

आचार्य, श्रीराम शर्मा (2004). *समाज की अभिनव रचना* / मथुरा, भारत : युगनिर्माण योजना, (पृ. 7)।

ईषावास्योपनिषद्– 11

ऋग्वेद – 10 / 191 / 3–4, 5 / 59 / 6

कठोपनिषद् – 1 / 5 / 20

झरे, कृष्णा (2009). *मानवतावाद–एक दार्शनिक अनुशीलन* (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)। हेमवती नंदन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढवाल।

देवराज (1976). *पूर्वी और पश्चिमी दर्शन* / इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन, (पृ. 166)।

ब्रह्मवर्चस (1998). *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय :* युगद्रष्टा का जीवन दर्शन (खण्ड–1)। मथुरा, भारत : अखण्ड ज्योति संस्थान, (पृ. 1.11)।

भावे, विनोबा (2001). *गीता प्रवचन* / वाराणसी, भारत : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, (पृ. 3)।

रंगनाथानन्द, स्वामी (1993). *स्वामी विवेकानन्द का मानवतावाद* / कोलकाता, भारत : अद्वैत आश्रम, (पृ. 7)।

राधाकृष्णन (1995). *रचनात्मक जीवन* / दिल्ली, भारत : हिंदी पॉकेट बुक्स, (पृ. 9)।

विवेकानंद, स्वामी (2006). विवेकानंद साहित्य (खण्ड – 2)। कोलकाता, भारत : अद्वैत आश्रम, (पृ. 212)।

सहाय, यदुवंश (1971). *महर्षि दयानन्द* / इलाहबाद, भारत : लोकभारती प्रकाशन, (पृ. 21)।

शर्मा, चन्द्रधर (1998). *पाश्चात्त्य दर्शन* / दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, (पृ. 1)।

शर्मा, ब्रजभूषण (1978). *मानववाद तथा मानवतावाद* / दिल्ली, भारत : श्री कला प्रकाशन, (पृ. 115)।

श्रीमद्भगवद्गीता –12 / 13, 14, 16, 18

श्रीअरविन्द (2011). *मानव चक्र* / पांडिचेरी, भारत : श्री अरविन्द आश्रम, (पृ. 77)।

Corliss, L. (1958). *The philosophy of Humanism*. London : Elek Book, (pp.10).

George, S. (1955). *Albert Schweitzer: the man and his mind*. California : Black Publication, (pp. 276).

Sartre, J. P. (1955). *Existentalism and Humanism*. London : Phlip Mairet Mathuen, (pp. 24).

Roy, M. N. (1961). *New Humanism*. Kolkata, India: Renaissance Publishers, (pp.18).

Tagore, R. N. (1988). *Personality*. New Delhi, India : Macmillan India Ltd, (pp. 60).